संगीत और धर्म अंतः का सम्बन्ध

डॉ० संगीता गौरंग
एसोसिएट प्रोफेसर एवं एच०ओ०डी०
संगीत विभाग
के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फॉर वुमन
करनाल (हरियाणा)

सांराश

भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श भावभूमि पर प्रवाहित होती रही है यदि हम भारतीय संस्कृति के किसी भी पक्ष का अध्ययन करें तो हम धर्म से अनुप्रणित पायेंगे। संगीत भी भारतीय विचारधारा की इस विशेषता से पूर्णतया प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। संगीत सार्वभोम अविरल गतिमान और सर्वसुखान्त है। उसका जन्म मानव के साथ हुआ है। उसका विकास समाज के संस्कार से हुआ है और उसका उत्कर्ष विश्व सभ्यता का मानव सूचकांक है। भारतीय संगीत के तीनों अंगों (गीत, वाद्य तथा नृत्य) की उत्पत्ति का उद्‌गम स्थान धर्म को बताया गया है और प्रायः सभी वाद्यों को प्रायः किसी न किसी देवता से जोड़ा गया है।

यह कहना अनुचित न होगा कि संगीत और धर्म का सम्बन्ध चोली और दामन जैसा है। मनुष्य इसकी स्वर लहरियों में खोकर भगवान में पूर्णतः लीन हो जाता है। चाहे मनुष्य कितनी भी परेशानियों में क्यों न घिरा हो, वह संगीतिक ध्वनि के शीतल, पावन स्पर्श को पाकर उसके हृदय से कुलशित वेदनाएं क्षण भर में विरोहित हो जाती है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ० संगीता गौरंग,

"संगीत और धर्म अंतः का सम्बन्ध"

शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 242—245
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 35

वर्तमान युग में वैदिक संगीत की अपेक्षा भक्ति संगीत अधिक प्रचलित है। इसका कारण यह है कि भक्ति संगीत का काव्य भण्डार, सरस एंव सरल है जिसके द्वारा साधारण से साधारण जनता भी आनन्दानुभूति का आभास कर सकती है। भक्ति काव्य में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। कई सन्त भक्तों ने जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं – वल्लभ, चेतन्य, सूरदास, मीरा, तुलसीदास, पुगंदरदास, त्यागराग, तुकाराग, हरिदास, जयदेव, नानक, विद्यापति इत्यादि ने स्वर और शब्द की चेतना शक्ति से भी भगवान का अनन्य प्रेम उपलब्ध किया तथा जगत को सत्य का संदेश दिया।

धर्म एक बहुत ही व्यापक शब्द है। विभिन्न अवस्थाओं में धर्म का अर्थ विभिन्न रुपों में परिवर्तित होता रहता है – पदार्थ मात्र का वह प्राकृतिक तथा मूलगुण, विशेषता या वृति, जो उसमें बराबर स्थायी रुप में वर्तमान रहती हो, जिससे उसकी पहचान होती हो और उससे कभी अलग न की जा सकती हो जैसे – आग का धर्म जलना और जलाना या जीव का धर्म जन्म लेना और मरना है। [1] सामाजिक क्षेत्र में नियम, विधि, व्यवहार आदि के आधार पर नियत तथा निश्चित वे सब काम या बातें, जिनका पालन समाज के अस्तित्व या स्थिति के लिये आवश्यक होता है और जो प्रायः सर्वत्र सर्विक रुप से मान्य होती है जैसे अहिंसा, दया, न्याय, सत्यता आदि का आवरण मनुष्य मात्र का धर्म है।

लौकिक क्षेत्र में वे सब कर्म तथा कर्तव्य, जिनका आवरण या पालन किसी विशिष्ट स्थिति के लिये विरोहित हो। जैसे – माता–पिता की सेवा करना पुत्र का धर्म है। पढ़ना–लिखना, यज्ञ आदि करना, किसी समय ब्राह्मणों का मुख्य धर्म माना जाता है। कर्तव्य शब्द से व्यवहृत धर्म का अर्थ उत्तरदायित्व से है जैसे एक मां का धर्म है सन्तान पालन करना। ठीक उसी प्रकार धर्म मनुष्य को उसके उत्तरदायित्व से अवगत कराता है और विधि के विधान की तरह उसका उत्तरदायित्व करता है हमें अपने नैतिक पथ पर अडिग रहने का संदेश देता है।

संगीत उस नैसर्गिक और सनातन भाषा का नाम है जिसके माध्यम से समस्त प्राणी वर्ग समयानुरुप अपने हृदय के गुप्त और अव्यक्त भावों को हाव, भाव और कंठस्वर द्धारा सम श्रेणी के प्राणियों में अनायास व्यक्त व वितरित किया करते है। सभी प्राणियों को इस निर्विकार भाषा का बोध जन्म से ही संस्कार के रुप में अनायास प्राप्त है जो सभी प्रकार के मानवीय बंधनों से युक्त होते हुए भी एक महान् आकर्षण–शक्ति को लिये रहता है जिससे इसकी सर्वव्यापकता का अनुभव सभी अनुरागी पग–पग में किया करते हैं। संगीत की उत्पत्ति का आधार नाद या ध्वनि है। नाद के बिना संगीत का अस्तित्व नहीं है।

हमारी अन्तरात्मा या चेतना का सीधा सम्बन्ध उस नाद ब्रह्मा से होना स्वाभाविक ही रहा है क्योंकि आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है। यह नाद ब्रम्ह्य ही संगीत का रुप धारण कर हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। सम्पूर्ण जगत नादाधीन है।

नाद का सामान्य अर्थ है आवाज़। नाद के योग से ही वर्णोच्चार होता है । वर्ण से पद (शब्द) की सिद्धि होती है पद से भाषा होती हैं तथा भाषा के होने से ही जगत के सब व्यवहार चलते है अतः सम्पूर्ण जगत ही नादाधीन है। संगीत का उद्गम स्थल भी नाद ही है।

नाद संगीत में विभिन्न रुप धारण करके संगीत को रमणीयत प्रदान करता है। संगीत में नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर तथा स्वरों से रागोत्पत्ति होती है अतः कहा जा सकता हैं कि नाद ही संगीत का आधार है।

संगीत के शब्दिक अर्थ के संदर्भ में कहा गया है कि "मधुर ध्वनियों या स्वरों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार और कुछ विशिष्ट लयों में होने वाले प्रस्फूटन को ही संगीत कहते हैं।[2]

धर्म और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध

संगीत की दृष्टि में धर्म व्यापक भी है और सीमित भी। इस अदृश्य शक्ति की खोज का एकमात्र साधन ही संगीत है। धर्म ईश्वर से जुड़ा है और संगीत प्रत्येक सामाजिक प्राणी के कण–कण में ईश्वर की तरह बैठा हुआ है। धर्म सत्य की खोज है तो संगीत आनन्द की अनुभूति। आनन्द ईश्वर का स्वरुप है। भारतीय मनीषियों ने सदैव ही मुक्त कण्ठ से इस कला का यशोगान किया है क्योंकि ये चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति संगीत द्वारा सहज ही हो सकती है।

प्रत्येक धर्म ने संगीत को ईश्वरोपासना का सशक्त माध्यम माना है। हमारे देश में विभिन्न भाषाओं के एवं धर्मो के लोग रहते हैं जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी आदि–आदि। इन सब धर्मो में संगीत की प्रधानता एंव महत्वता को स्पष्ट देखा जा सकता है। हिन्दू धर्म का सामवेद पूर्णतयः गेय है। इसके मंत्रो का उच्चारण पूर्णतयः संगीतबद्ध है। प्रत्येक धर्म में संगीत इस तरह से समाया हुआ है कि धर्म को हम संगीत से कदापि अलग नहीं कर सकते। जैसे मुस्लिम धर्म में नमाज़ पढ़ने से पूर्व मौला द्वारा दी जाने वाली अजान "अल्ला हो अकबर" एक भक्ति भावना पूर्ण आवाज़ है जो पूर्ण रुप से गेय है। इसके अतिरिक्त सूफी संतो ने भी अपनी उपासना में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सिख धर्म के गुरुद्वारों में जो प्रार्थनायें की जाती हैं वे भी संगीतिक हैं। इसी प्रकार ईसाई धर्म में भी गिरजाघरों में की जाने वाले करुणामयी प्रार्थनाएं ईसाई धर्म में संगीत की महत्वता को स्पष्ट बताती हैं अतः ईश्वरोपासना के लिए सबसे ज्यादा सबल और पवित्र साधन संगीत है। प्रत्येक धर्म की धरोहर संगीत है, इसलिये संगीत को हम धर्म से अलग नहीं कर सकते।

भारतीय संगीत का धर्म के साथ सम्बन्ध आदिकाल से ही स्थापित है। संगीत के आदि विद्वानों ने, शास्त्रवेताओं ने संगीत को नाद वेद की संज्ञा देकर उसकी उत्पत्ति सृष्टि कर्त्ता ब्रम्ह्य जी द्वारा बताई है। भारतीय संगीत के तीन अंग गायन, वादन व नृत्य इन तीन जगत की जननी गौरी को स्वर्ग सिहांसन पर सुशोभित कराकर प्रदोश के समय शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो गये और उनकी स्तुति करने लगे। सरस्वती ने वीणा, इन्द्र ने वेणु, ब्रम्ह्य ने करताल बजाना प्रारम्भ किया। लक्ष्मी जी ने गाना गाया और विष्णु भगवान मृदंग बजाने लगे। इस नृत्यमय संगीतोत्सव को देखने के लिये गन्धर्व, यज्ञ, पतंग, उरग, सिद्ध, साध्य, विधाधर, देवता व अप्सरायें आदि सभी उपस्थित थे।[3]

एक अन्य किवदन्ति के अनुसार पार्वती जी की शयन मुद्रा को देखकर शिवाजी ने उनके अंग प्रत्यंगों के आधार पर "रुद्रवीणा" की रचना की और अपने पांच मुखों से पंच रागों की उत्पत्ति की।

तत्पश्चात् छठा राग पार्वती जी के श्री मुख से उत्पन्न हुआ। शिव ने भैरव, हिण्डोल, मेघ, दीपक और श्रीराम बनाये और छठे राग कौशिक की उत्पत्ति पार्वती जी ने की।

हिन्दू धर्म में जितने भी संस्कार माने जाते हैं वे सभी धर्म और संगीत से ओत–प्रोत है जैसे जन्म, नामकरण, जडू–ला, यज्ञोपवीत, सगाई, विवाह एंव मृत्यु इत्यादि ये सभी संस्कार संगीतिक है। हमारे जितने भी उत्सव, पर्व, व्रत, त्यौहार हो सबमें संगीत की प्रधानता देखने को मिलती है। जैसे गणगौर, होली, तीज आदि। इस प्रकार मनुष्य ने जन्म लेते ही संगीत की सुमधुर ध्वनि को सुना और मृत्यु होने पर भी "राम नाम सत्य हैं" की एक मुख ध्वनि के साथ उसका पंचतत्वों से बना हुआ शरीर पुनः पंचतत्वों में लीन हो गया।

अतः संगीत साधना का पूरक स्वरुप गायन शैलियों में से भजन और कीर्तन ही है। संगीत की अबोध शक्ति के आगे कौन नतमस्तक नहीं होता। यह भी सत्य है कि जहां भगवान के भक्त गायन करते हैं वहीं उसका मन भी रमता है।

उपयुक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि संगीत ईश्वर प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम है। विद्वानों ने संगीत कला को केवल कला ही नहीं अपितु उपासना की पद्धति भी माना है।

संदर्भ

1. मानक हिन्दी कोश, सम्पादक रामचन्द्र
2. भारतीय संस्कृति में धर्म व दर्शन, प्रो0 शिवदत्त ज्ञानी